संडे
नईदुनिया
नईदुनिया मीडिया प्रा.लि.

4 जनवरी 2009

रविवारीय अखबार के साथ नि:शुल्क

आदमी का खून पीने वाला गुंडा बैंक

सौरमंडल से परे पृथ्वी की तलाश

विद्यार्थियों ने दूर कर दी मां-बाप की गरीबी

उड़ीसा के कालाहांडी के आदिवासी इलाकों के बच्चे इस स्कूल में पढ़ाई करते हुए अपने माता-पिता की गरीबी भी दूर करने लगे हैं

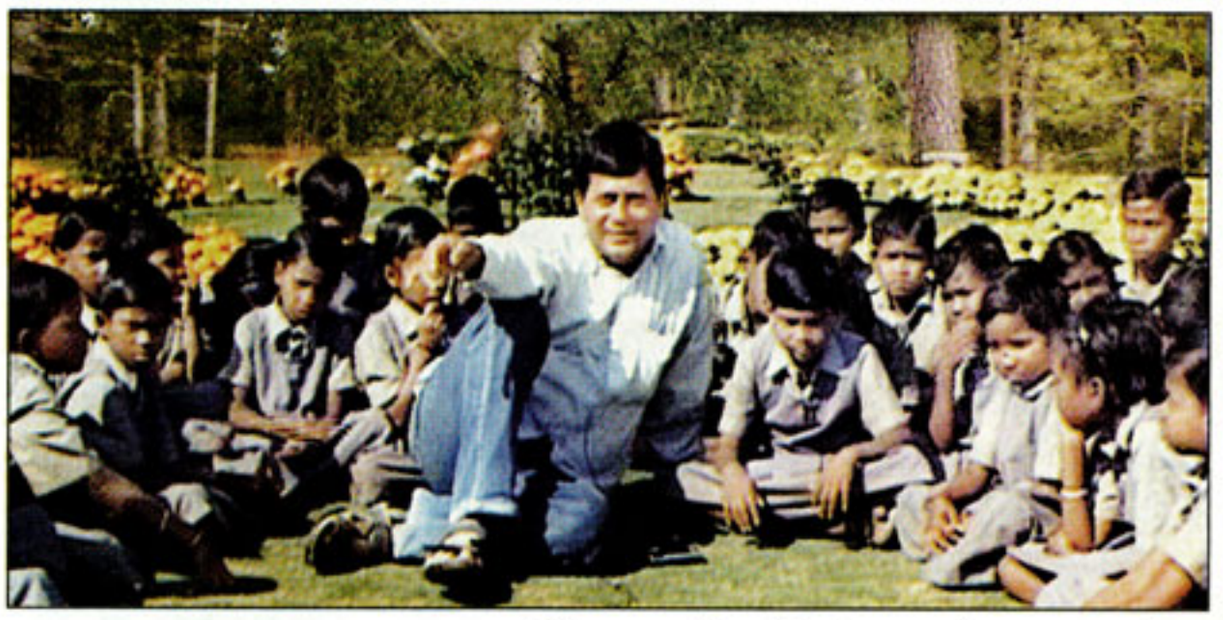

बच्चों के साथ 'किट' के संरक्षक डॉ. अच्युत सामंत

धनंजय

गरीबी दूर करने का यह एक ऐसा मॉडल है जिसे भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से लेकर नोबेल पुरस्कार विजेता रिचर्ड अर्नेस्ट तक ने अद्‌भुत करार दिया है। अब पूरी दुनिया की स्वयंसेवी संस्थाएं उसे अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में लागू कर रही हैं। यह मॉडल है – भुवनेश्वर स्थित गरीब आदिवासी बच्चों के स्कूल कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस (किस) का। भूख से मौत के लिए कुख्यात कालाहांडी जैसे उड़ीसा के आदिवासी इलाकों के बच्चे अब इस स्कूल में पढ़ाई करते हुए अपने माता-पिता की गरीबी भी दूर करने लगे हैं। इस स्कूल में उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त कर रहे 5,000 बच्चे पढ़ने के साथ-साथ ही सिलाई सहित रोजमर्रा के काम में आने वाले फिनाइल व ग्रीटिंग कार्ड जैसे सामानों के उत्पादन में भी थोड़ा वक्त देते हैं। इसकी एवज में उनके माता-पिता को हर महीने एक-एक हजार रुपए भेज दिए जाते हैं।

इन बच्चों ने प्रतिदिन दो घंटे काम के बाद जिन सामानों का उत्पादन शुरू किया है, उनका बाजार डीम्ड यूनिवर्सिटी खुद ही है। कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (किट) नामक यह विश्वविद्यालय ही स्कूल के उत्पादित सभी वस्तुओं का खरीदार बन गया है। आने वाले कॉमनवेल्थ खेलों में भी पूरे देश के लोग इस स्कूल के बच्चों का जलवा देखेंगे। पिछले साल ही लंदन में इस स्कूल की अंडर 14 रग्बी टीम ने पूरी दुनिया की टीमों को हरा कर विश्वकप हासिल किया। शायद वह इसलिए भी सुर्खियों में नहीं आ पाया क्योंकि यह कारनामा गरीब आदिवासी बच्चों का था। इस टीम ने लंदन के स्कॉटिस रग्बी क्लब में दक्षिण अफ्रीका की टीम को हराकर जब रग्बी विश्वकप पर कब्जा जमाया तो अब तक भूख से मौत को लेकर चर्चित उड़ीसा के आदिवासी इलाकों को मानो मुक्ति की ट्रॉफी मिल गई। वे अपने स्कूल के आदिवासी साथियों के लिए संकल्प लेकर आए जो आने वाले समय में गरीबी की चक्की में पिस रहे उड़ीसा के आदिवासी इलाकों की तस्वीर बदल देगा।

भुवनेश्वर स्थित इस स्कूल के तमाम 5,000 आदिवासी लड़के-लड़कियों को पढ़-लिख कर अपने इलाके की गरीबी दूर करने की लगन लगी हुई है। उड़ीसा में 23.13 प्रतिशत आदिवासी हैं। उनके बच्चों के लिए पढ़ने की सुविधा तो दूर दो जून की तक रोटी नहीं मिलती है। 'किस' में इन्हीं इलाकों के गरीब बच्चे अपनी मुक्ति की राह तैयार कर रहे हैं। उड़ीसा के आदिवासी इलाके अक्सर भूख से हुई मौतों के लिए सुर्खियों में रहते हैं। कालाहांडी तो भूख से मौत का पर्याय ही बन चुका था लेकिन अब अगर कालाहांडी खबर नहीं बन रहा है तो इसमें इस स्कूल का भी बहुत बड़ा योगदान है। इन बच्चों की आंखों में डॉक्टर, इंजीनियर, एमबीए, खिलाड़ी, वैज्ञानिक और न जाने क्या-क्या बनने के सपने तैर रहे हैं। इनमें से किसी में उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जाने की तैयारी में है तो कोई नोबेल प्राइज विजेता रिचर्ड अर्नेस्ट से हाथ मिलाने के बाद वैज्ञानिक बनने की धुन से लबरेज है। पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, नोबल पुरस्कार विजेता रिचर्ड अर्नेस्ट, शबाना आजमी सहित देश की अनेक बड़ी हस्तियां स्कूल आकर इसकी प्रशंसा के पुल बांध चुके हैं। 'किस' ने हाल ही में पेनसिलवेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी के साथ इन बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। सबसे बड़ा स्कूल होने की वजह से इस स्कूल का नाम अब लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज है। डीम्ड यूनिवर्सिटी के अत्याधुनिक मेडिकल, इंजीनियरिंग व एमबीए संस्थानों में भी इनके लिए सीटें आरक्षित हैं। कॉरपोरेट दुनिया के लोग इसे अनोखी मिसाल मानते हैं। 'किट' के 43 वर्षीय संरक्षक डॉ. अच्युत सामंत ने इस स्कूल को केजी टू पीजी संस्थान के रूप में स्थापित किया है। सामंत कहते हैं, 'मेरा सपना है इस स्कूल को दुनिया की पहली ट्राइबल यूनिवर्सिटी बनाना।' 'किस' के मॉडल को अपनाकर लाखों गरीबों का भला हो सकता है। डॉ. सामंत का खुद अपना बचपन गरीबी में बीता है।

इस डीम्ड यूनिवर्सिटी को स्थापित करने वाले डॉ. सामंत अपनी सादगी व समाज सेवा की वजह से कॉरपोरेट संत के रूप में जाने जाते हैं।

डॉ. सामंत ने भुवनेश्वर से 48 किलोमीटर दूर अपने गांव कलारबैंक को भी तमाम सुविधाओं से लैस कर ऐसा मॉडल गांव बना दिया है कि पास के छोटे शहर भी उनके सामने फीके पड़ जाएं। गांव में आवासीय हाईस्कूल, आवासीय कॉलेज, 10 बेड का प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, स्ट्रीट लाइट, पक्की सड़क के अलावा विलेज नॉलेज सेंटर तथा तालाब आदि उपलब्ध हैं। ■